# अध्यापन पेशे के प्रति शिक्षक-प्रशिक्षकों की वचनबद्धता एवं जवाबदेही

ग्रीष्मा शुक्ला*
स्वीटी कुमारी**

*आज ज्ञान विस्फोट के युग में अध्यापक में वृत्यात्मकता का होना आवश्यक है, किंतु इसका आशय यह नहीं है कि अध्यापक भावना रहित ज्ञान का प्रतीक बन जाए। आज 21वीं शताब्दी में अगर हम देखें तो सब कुछ बदल गया है। आज शिक्षकों में वचनबद्धता, समर्पण एवं प्रतिबद्धता का अभाव परिलक्षित हो रहा है जिससे शिक्षकों की गुणवत्ता में दिन-प्रतिदिन गिरावट आ रही है। वर्तमान समय में विश्व अध्यापकों की वचनबद्धता एवं समर्पण भाव को बढ़ाने एवं समर्पित अध्यापकों की खोज में लगा हुआ है। आज आवश्यकता है वचनबद्धता की, फिर चाहे वह अध्यापक हो या विद्यार्थी। राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् ने शिक्षा में गुणवत्ता लाने के लिए, शिक्षक में मूल योग्यताओं के साथ-साथ वचनबद्धता होना भी आवश्यक बताया है। इस दृष्टि से आज के युग में आवश्यकता है शिक्षकों की वचनबद्धता व जवाबदेही की। इस अध्ययन का उद्देश्य अध्यापन पेशे के प्रति शिक्षक-प्रशिक्षकों की वचनबद्धता व जवाबदेही का निवास क्षेत्र, जेंडर, शिक्षण अनुभव व शिक्षण विषय के संदर्भ में अध्ययन करना है। इस शोध के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया था। यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा 180 शिक्षक-प्रशिक्षकों को न्यादर्श के लिए चयनित किया गया। प्रदत्त संकलन हेतु अध्यापन पेशे के प्रति जवाबदेही व वचनबद्धता से संबंधित स्वनिर्मित उपकरणों का प्रयोग किया गया। 'टी' परीक्षण तथा प्रसरण विश्लेषण के द्वारा प्रदत्तों का विश्लेषण किया गया। इस अध्ययन के निष्कर्ष प्राप्त हुए कि ग्रामीण व शहरी दोनों क्षेत्र के शिक्षक-प्रशिक्षकों में अध्यापन पेशे के प्रति समान रूप से वचनबद्धता व जवाबदेही पाई गई। पुरुष शिक्षक-प्रशिक्षकों की अपेक्षा महिला शिक्षक-प्रशिक्षक अध्यापन पेशे के प्रति अधिक वचनबद्ध तथा जवाबदेह होती हैं। 10 वर्ष से अधिक अनुभव रखने वाले शिक्षक-प्रशिक्षकों में अध्यापन कार्य के प्रति अधिक वचनबद्धता व जवाबदेही पाई गई। विज्ञान तथा वाणिज्य विषयों के शिक्षक-प्रशिक्षक की अपेक्षा कला विषयों के शिक्षक-प्रशिक्षक अध्यापन पेशे के प्रति अधिक वचनबद्ध तथा जवाबदेह होते हैं।*

शिक्षा द्वारा मनुष्य सुंसस्कृत और समृद्ध बनता है, शिक्षा मनुष्य को मानवीय बनाती है। शिक्षा हमारी उन्नति का साधन है, शिक्षा ही व्यक्ति को वैज्ञानिक, साहित्यकार, नेता, लेखक और समाज निर्माता बनाती है, क्योंकि प्राचीनकाल से ही शिक्षा को समाज में सबसे ऊँचा स्थान दिया जा रहा है। शिक्षा एक ज्योति है तथा शिक्षक एक ज्योति पुंज है जो स्वयं जलकर राष्ट्र को प्रकाशित करता है। शिक्षकों के व्यक्तित्व का

*प्रोफ़ेसर, स्कूल ऑफ़ एजुकेशन, जयपुर नेशनल यूनिवर्सिटी, जयपुर, राजस्थान 302017
**शोधार्थी, स्कूल ऑफ़ एजुकेशन, जयपुर नेशनल यूनिवर्सिटी, जयपुर, राजस्थान 302017

© NCERT not to be republished

बालकों के ऊपर अमिट प्रभाव पड़ता है, क्योंकि वह उनके भावी जीवन की नींव रखता है। उनका किसी भी राष्ट्र अथवा समाज की उन्नति या अवनति में महत्वपूर्ण स्थान होता है। भारतीय शिक्षा आयोग के अध्यक्ष दौलत सिंह कोठारी (1964–66) के शब्दों में, "कल के भावी भारत का निर्माण आज के कक्षा-कक्ष में हो रहा है।" यदि उक्त कथन पर ध्यान दिया जाए तो कल के भारत का निर्माता आज का शिक्षक ही है जिसके मनोबल एवं संतुष्टि के आधार पर ही श्रेष्ठ एवं स्वस्थ देश का निर्माण संभव है। किंतु आज 21वीं शताब्दी में अगर हम देखें तो सब कुछ बदल गया है।

आज शिक्षकों में वचनबद्धता, समर्पण एवं प्रतिबद्धता का अभाव परिलक्षित हो रहा है जिससे शिक्षकों की गुणवत्ता में दिन-प्रतिदिन गिरावट आ रही है। आज पूरा विश्व अध्यापकों की वचनबद्धता एवं समर्पण भाव को बढ़ाने एवं समर्पित अध्यापकों की खोज में लगा हुआ है। आज आवश्यकता है अध्यापक को आत्म-दर्शन करने की, स्वयं में झाँकने की। आज आवश्यकता है वचनबद्धता की, फिर चाहे वह अध्यापक हो या विद्यार्थी। राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् ने शिक्षा में गुणवत्ता लाने के लिए शिक्षक में मूल योग्यताओं के साथ-साथ वचनबद्धता होना भी आवश्यक बताया है। एक शिक्षक को विद्यार्थियों, अभिभावकों तथा समुदाय के सदस्यों के प्रति वचनबद्ध होना चाहिए। उसे अपने कार्य के प्रति वचनबद्ध होना चाहिए, साथ ही कार्य की सर्वोत्कृष्टता के प्रति भी वचनबद्ध होना चाहिए। माहेश्वरी ए. (2004) का मानना है कि विद्यालय अध्यापकों में व्यावसायिक प्रतिबद्धता उनके सामाजिक व शैक्षिक स्तर से संबंधित होती है। वचनबद्धता के साथ अध्यापक को विषय-वस्तु को पूर्णरूपेण जुड़े रहना, ज्ञान का नवीनीकरण करते रहना व पेशेवर वृद्धि करते रहना भी अति आवश्यक है। शुक्ला, शशि (2014) शिक्षक की प्रतिबद्धता और योग्यता को उसकी संतुष्टि के साथ जुड़ा होना आवश्यक है। महात्मा गांधी ने अध्यापकों के संबंध में कहा है कि, "शिक्षक को अपने विद्यार्थियों के हृदय से संबंध स्थापित करना चाहिए।" अत्री, अजय कुमार एवं देवी, नीलम (2017) के अनुसार शिक्षकों की प्रतिबद्धता शिक्षार्थी, समाज, व्यावसायिक कार्यों तथा पेशे के प्रति होती है। अध्यापक में अपने पेशे के प्रति निष्ठा व वचनबद्धता पाँच बातों से चिह्नित की जा सकती है, जो इस प्रकार है—

- एक अभिवृत्तिमान के रूप में एक अध्यापक अपने वृत्तिक विकास को सर्वोच्च वरीयता देता है।
- वह शिक्षण व अधिगम के प्रति उत्साही एवं प्रेरित रहता है।
- वह अपने विद्यार्थियों को भावपूर्ण ढंग से जोड़ लेता है। उसके विद्यार्थी उसे अपने शुभचिंतक, मित्र और मार्गदर्शक के रूप में स्वीकार करते हैं।
- शिक्षक अपने विद्यार्थियों के प्रति सकारात्मक मनोवृत्ति एवं दृष्टिकोण रखता है तथा वह अपने विद्यार्थियों की आवश्यकताओं, महत्वाकांक्षाओं, लक्ष्यों, कमज़ोरियों, अन्तर्निहित क्षमताओं और परिस्थितियों को समझता है और तदनुरूप उन्हें स्व-विकास के लिए मार्गदर्शन देता है।

यह स्वाभाविक है कि सभी अध्यापक उपरोक्त कसौटियों पर समान रूप से खरे नहीं उतरते। उनमें भिन्नता होती है। आज ज्ञान विस्फोट के युग में अध्यापक में वृत्यात्मकता का होना आवश्यक है, किंतु इसका आशय यह नहीं है कि अध्यापक भावना रहित ज्ञान का प्रतीक बन जाए। उसके शिक्षण

© NCERT not to be republished

में ज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक गुणों का स्वस्थ समन्वय होना चाहिए।

शिक्षक की गुणवत्ता एवं उसकी जवाबदेही के मूल में उच्च दक्षतायुक्त वचनबद्धता तथा भविष्य दृष्टता का होना आवश्यक है। शिक्षकों से जुड़े अन्य विद्यार्थी चाहे जितने भी प्रभावी हों, जब तक एक शिक्षक प्रभावशाली नहीं होगा, शिक्षण का स्तर ऊँचा नहीं हो सकता है। अतः शिक्षण के स्तर की जवाबदेही शिक्षक की ही मानी जाती है। यदि एक शिक्षक अपने दायित्व के बोध का पालन नहीं करता है तो वह समाज के एक बहुत बड़े वर्ग अथवा संपूर्ण समाज की हानि कर सकता है।

वर्तमान में विद्यालय में शिक्षक अपने दायित्व का उचित निर्वाह नहीं कर पा रहा है, फलस्वरूप शिक्षा के स्तर में वांछित तथा गुणात्मक विकास नहीं हो रहा है। इसी दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में, सरकार ने शिक्षकों को समाज के सामाजिक एवं सांस्कृतिक दायित्वों के प्रति उत्तरदायी बताया है। उत्तरदायित्व के भाव को जवाबदेही में सम्मिलित किया जाता है, किंतु यह पर्याय नहीं है। हम सबके कुछ उत्तरदायित्व हैं, उन्हें निभाने के लिए हमें किसी न किसी रूप में कुछ पारिश्रमिक मिलता है। दूसरे शब्दों में, जो पारिश्रमिक मिलता है उसके बदले में हमारे कुछ उत्तरदायित्व हैं। इन उत्तरदायित्वों को निभाना हमारा कर्तव्य है। हम किस प्रकार से इसे निभाते हैं? उसके लिए हमें किसी न किसी को अपने किए कार्य का लेखा-जोखा देना होता है। इस प्रकार हम एक बंधन के अंतर्गत कार्य करते हैं।

शिक्षक जवाबदेही, एक ऐसा शब्द है जो शिक्षक के कर्तव्य बोध का आभास कराता है। जवाबदेही की समस्या बहुत कठिन और संवेदनशील है। जीवन के किसी भी क्षेत्र में वह कार्य दिखाई नहीं देता, जिसमें पूरी तरह से पारदर्शिता हो। जवाबदेही के अभाव में अराजकता या जो चाहे सो करे की स्थिति बन जाती है। शिक्षा के क्षेत्र में भी इसी प्रकार का परिवेश पनपता दिखाई पड़ रहा है। अत्तारवाला, पारुल (2015) का मानना है कि उच्च शिक्षा में सुधार का सुझाव देने के लिए नियुक्त सभी समितियों और आयोगों ने उनकी जवाबदेही के लिए नियमित शिक्षक के प्रदर्शन मूल्यांकन को सुनिश्चित करने की सिफ़ारिश की थी।

जवाबदेही शब्द अंग्रेजी शब्द 'अकांटबिलिटी' का हिंदी रूपांतरण है, जिसका अर्थ उत्तरदायित्व या जवाबदेही है। जवाबदेही सामाजिक, प्रशासनिक एवं राजनैतिक नियत्रंण से नियमित प्रत्यय है। वर्तमान में अध्यापक शिक्षा की स्थिति असंतोषजनक हो गई है। प्रायः शिक्षक अपने पेशे के प्रति पूर्ण रूप से न्याय करते प्रतीत नहीं हो रहे हैं। वे ईमानदारी के साथ अपने कर्तव्यों को नहीं निभा पा रहे हैं। शिक्षक अपने पेशे को धन अर्जन करने का एक साधन मात्र समझता है, जिससे उनकी आजीविका का निर्वहन हो रहा है। बाधवर, मंजू (2014) अध्यापन की गुणवत्ता, पेशे के संबंध में शिक्षकों की भागीदारी संगठन के लिए और पेशेवर संतुष्टि के स्तर पर निर्भर करती है। प्रशिक्षकों का अध्यापन पेशे में प्रवेश लेते ही उनके ऊपर संपूर्ण समाज, राष्ट्र व व्यक्ति के विकास की ज़िम्मेदारी आ जाती है। इस दृष्टि से आज के युग में आवश्यकता है— शिक्षकों की वचनबद्धता व जवाबदेही की। इसके साथ ही शिक्षक के अंदर आजीविका के प्रति एक आंतरिक वचनबद्धता उत्पन्न करना भी आवश्यक है। शोधार्थी के मस्तिष्क में इस समस्या से संबंधित कतिपय प्रश्न उत्पन्न हुए जो इस प्रकार हैं— शिक्षक-प्रशिक्षकों

© NCERT not to be republished

के अध्यापन स्तर में न्यूनता क्यों परिलक्षित हो रही है? समाज में अध्यापन पेशे की गुणवत्ता में कमी क्यों दिखाई दे रही है? एक शिक्षक तैयार करने वाला शिक्षक-प्रशिक्षक अपने पेशे के प्रति किस सीमा तक जवाबदेह है? एक शिक्षक-प्रशिक्षक किस-किस क्षेत्र में अपनी वचनबद्धता निभाता है? क्या शिक्षण अनुभव में परिवर्तन शिक्षकों की जवाबदेही व वचनबद्धता में परिवर्तन का द्योतक होता है? शिक्षक-प्रशिक्षक की जवाबदेही व वचनबद्धता पर निवास क्षेत्र का प्रभाव किस सीमा तक दृष्टिगत होता है? इन सबका समाधान खोजने के लिए शोधार्थी द्वारा निम्न समस्या कथन पर शोध अध्ययन किया गया।

## समस्या कथन

अध्यापन पेशे के प्रति शिक्षक-प्रशिक्षकों की वचनबद्धता एवं जवाबदेही का अध्ययन।

## शोध उद्देश्य

अध्यापन पेशे के प्रति शिक्षक-प्रशिक्षकों की वचनबद्धता व जवाबदेही का निम्न के संदर्भ में अध्ययन करना—

1. क्षेत्र (ग्रामीण एवं शहरी)
2. जेंडर (महिला एवं पुरुष)
3. शिक्षण अनुभव
4. शिक्षण विषय (कला, विज्ञान, वाणिज्य)

## संक्रियात्मक परिभाषाएँ

**शिक्षक-प्रशिक्षक**— इस अध्ययन में शिक्षक-प्रशिक्षकों से तात्पर्य शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्यापनरत शिक्षकों से है।

**वचनबद्धता**— इस अध्ययन में वचनबद्धता से तात्पर्य शिक्षक-प्रशिक्षकों की अध्ययन पेशे के प्रति मनोवृत्ति एवं दृष्टिकोण से है।

**जवाबदेही**— इस अध्ययन में जवाबदेही से तात्पर्य शिक्षक-प्रशिक्षकों की अध्ययन पेशे के प्रति अपने उत्तरदायित्वों के निर्वाह से है।

## परिकल्पनाएँ

- अध्यापन पेशे के प्रति पुरुष व महिला शिक्षक-प्रशिक्षकों के वचनबद्धता के प्राप्तांकों के मध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं है।
- अध्यापन पेशे के प्रति ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के शिक्षक-प्रशिक्षकों की वचनबद्धता के प्राप्तांकों के मध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं है।
- दस वर्ष से कम एवं 10 वर्ष से अधिक शिक्षण अनुभव वाले शिक्षक-प्रशिक्षकों की अध्यापन पेशे के प्रति वचनबद्धता के प्राप्तांकों के मध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं है।
- अध्यापन पेशे के प्रति कला, विज्ञान, वाणिज्य शिक्षण विषयों का अध्यापन करने वाले शिक्षक-प्रशिक्षकों के वचनबद्धता के प्राप्तांकों के मध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं है।
- अध्यापन पेशे के प्रति पुरुष व महिला शिक्षक-प्रशिक्षकों की जवाबदेही के प्राप्तांकों के मध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं है।
- अध्यापन पेशे के प्रति ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के शिक्षक-प्रशिक्षकों की जवाबदेही के प्राप्तांकों के मध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं है।
- दस वर्ष से कम एवं 10 वर्ष से अधिक शिक्षण अनुभव वाले शिक्षक-प्रशिक्षकों की जवाबदेही के प्राप्तांकों के मध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं है।
- अध्यापन पेशे के प्रति कला, विज्ञान, वाणिज्य शिक्षण विषयों का अध्यापन करने वाले

© NCERT not to be republished

शिक्षक-प्रशिक्षकों की जवाबदेही के प्राप्तांकों के मध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं है।

## शोध विधि

इस शोध अध्ययन के लिए शोध विधि के रूप में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

## न्यादर्श

इस शोध अध्ययन में राजस्थान राज्य के जयपुर ज़िले में स्थित समस्त 142 ग्रामीण व शहरी शिक्षक-प्रशिक्षक महाविद्यालयों में अध्यापनरत शिक्षक-प्रशिक्षकों को सम्मिलित किया गया। न्यादर्श चयन हेतु यादृच्छिक न्यादर्शन विधि द्वारा 180 शिक्षक-प्रशिक्षकों को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया।

## शोध उपकरण

इस शोध अध्ययन में प्रदत्त संकलन हेतु शोधार्थी द्वारा अध्यापन पेशे के प्रति जवाबदेही व वचनबद्धता से संबंधित स्वनिर्मित उपकरणों का प्रयोग किया गया, जो निम्न है—

1. शिक्षक वचनबद्धता मापनी
2. शिक्षक जवाबदेही मापनी

## प्रदत्त विश्लेषण

इस अध्ययन में प्रदत्तों के विश्लेषण में सांख्यिकी विश्लेषण के रूप में 't' परीक्षण तथा प्रसरण विश्लेषण का प्रयोग किया गया था।

## परिणामों की व्याख्या

इस अध्ययन में संकलित प्रदत्तों का विश्लेषण मध्यमान, प्रमाप विचलन, 't' परीक्षण तथा प्रसरण विश्लेषण के प्रयोग के पश्चात् परिणामों की व्याख्या इस प्रकार है—

**तालिका 1— अध्यापन पेशे के प्रति पुरुष एवं महिला शिक्षक-प्रशिक्षकों की वचनबद्धता**

| जेंडर भेद | संख्या | माध्य | प्रमाप विचलन | 't' मूल्य |
|---|---|---|---|---|
| पुरुष | 42 | 100.27 | 5.11 | 2.33* |
| महिला | 138 | 102.32 | 6.03 | |

*0.05 सार्थकता स्तर

तालिका 1 से यह ज्ञात होता है कि वचनबद्धता के संबंध में पुरुष व महिला शिक्षक-प्रशिक्षकों के प्राप्तांकों का माध्य क्रमशः 100.27 व 102.32 है तथा प्रमाण विचलन क्रमशः 5.11 व 6.03 है। तालिका 1 में प्रदर्शित माध्यों के अंतर की सार्थकता जाँच करने पर मूल्य 2.33 प्राप्त हुआ है, जो 0.05 सार्थकता स्तर पर सारणी मूल्य 1.96 से अधिक है।

अतः शून्य परिकल्पना अध्यापन पेशे के प्रति पुरुष व महिला शिक्षक-प्रशिक्षकों की वचनबद्धता में सार्थक अंतर नहीं है, अस्वीकृत की जाती है। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि पुरुष व महिला शिक्षक-प्रशिक्षकों की वचनबद्धता में भिन्नता है। इस भिन्नता का संभावित कारण यह हो सकता है कि पुरुष शिक्षक-प्रशिक्षकों की अपेक्षा महिला शिक्षक-प्रशिक्षक अपने कार्य के प्रति ज़्यादा वचनबद्ध होती हैं, क्योंकि महिलाएँ किसी भी कार्य को धैर्य व समर्पण के साथ करती हैं।

**तालिका 2— अध्यापन पेशे के प्रति ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के शिक्षक-प्रशिक्षकों की वचनबद्धता**

| क्षेत्र | संख्या | माध्य | प्रमाप विचलन | 't' मूल्य' |
|---|---|---|---|---|
| ग्रामीण | 60 | 102.38 | 6.83 | 0.99* |
| शहरी | 120 | 101.23 | 4.95 | |

*0.05 सार्थकता स्तर

© NCERT not to be republished

तालिका 2 से ज्ञात होता है कि वचनबद्धता के संबंध में ग्रामीण व शहरी शिक्षक-प्रशिक्षकों के प्राप्तांकों का माध्य क्रमशः 102.38 व 101.23 है तथा प्रमाण विचलन क्रमशः 6.83 व 4.95 है। तालिका 2 में प्रदर्शित माध्यों के अंतर की सार्थकता जाँच करने पर मूल्य 0.99 प्राप्त हुआ है जो 0.05 सार्थकता स्तर पर सारणी मूल्य 1.96 से कम है।

अतः शून्य परिकल्पना अध्यापन पेशे के प्रति ग्रामीण व शहरी क्षेत्र शिक्षक-प्रशिक्षक की वचनबद्धता के मध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं है, स्वीकृत की जाती है। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के शिक्षक-प्रशिक्षकों की वचनबद्धता के माध्य में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

तालिका 3 से ज्ञात होता है कि शिक्षण अनुभव के संबंध में 10 वर्ष से कम व 10 वर्ष से अधिक शिक्षण अनुभव वाले शिक्षक-प्रशिक्षकों का माध्य क्रमशः 100.67 व 102.91 है तथा प्रमाप विचलन क्रमशः 5.17 व 6.03 है। इन माध्यों की सार्थकता जाँच करने पर मूल्य 2.17 प्राप्त हुआ है जो 0.05 सार्थकता स्तर पर तालिका मूल्य 1.96 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना 10 वर्ष से कम एवं 10 वर्ष से अधिक शिक्षण अनुभव वाले शिक्षक-प्रशिक्षकों की अध्यापन पेशे के प्रति वचनबद्धता में सार्थक अंतर नहीं है, अस्वीकृत की जाती है। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि शिक्षण अनुभव के आधार पर 10 वर्ष से कम व 10 वर्ष से अधिक शिक्षण अनुभव वाले शिक्षक-प्रशिक्षकों की अध्यापन पेशे के प्रति वचनबद्धता के मध्य अंतर है। इस अंतर का संभावित कारण यह हो सकता है कि अधिक अनुभव वाले शिक्षक-प्रशिक्षक अपने कार्य के प्रति अधिक सजग रहते हैं तथा गंभीरतापूर्वक अपने कार्यों को संपादित करते हैं।

तालिका 4 में अध्यापन पेशे के प्रति कला, विज्ञान या वाणिज्य शिक्षण विषयों का अध्यापन करने वाले शिक्षक-प्रशिक्षकों की वचनबद्धता (N180) के प्रसरण विश्लेषण ANOVA से संबंधित है। df-2, df-177 का प्राप्त मूल्य 10400.80 है जो कि इसके 0.05 सार्थकता स्तर पर अपेक्षित मूल्य

**तालिका 3 — 10 वर्ष से कम एवं 10 वर्ष से अधिक शिक्षण अनुभव वाले शिक्षक-प्रशिक्षकों की अध्यापन पेशे के प्रति वचनबद्धता**

| शिक्षण अनुभव | संख्या | माध्य | प्रमाप विचलन | 't' मूल्य' |
|---|---|---|---|---|
| 1–10 वर्ष | 137 | 100.67 | 5.17 | 2.17* |
| 11 वर्ष से अधिक | 43 | 102.91 | 6.03 | |

*0.05 सार्थकता स्तर

**तालिका 4— अध्यापन पेशे के प्रति कला, विज्ञान या वाणिज्य संकाय का अध्यापन करने वाले शिक्षक-प्रशिक्षकों की वचनबद्धता**

| प्रसरण स्त्रोत | वर्गों का योग | स्वतंत्रता अंश | प्रसरण | प्रसरण अनुपात | परिणाम |
|---|---|---|---|---|---|
| प्रतिदर्शों के मध्य | 1839487.1 | 3-1=2 | 919743.55 | 10400.80 | असार्थक |
| प्रतिदर्शों के अंतर्गत | 15650.80 | 180-3=177 | 88.42 | | |

© NCERT not to be republished

2.99 से ज़्यादा है। अतः शून्य परिकल्पना, अध्यापन पेशे के प्रति कला, विज्ञान या वाणिज्य संकाय का अध्यापन करने वाले शिक्षक-प्रशिक्षकों की वचनबद्धता के प्राप्तांकों के मध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं है, अस्वीकृत की जाती है। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि कला, विज्ञान या वाणिज्य संकाय के शिक्षक-प्रशिक्षकों की अध्यापन पेशे के प्रति वचनबद्धता में भिन्नता है।

इस भिन्नता की माध्य परीक्षण के आधार पर निम्न स्थिति स्पष्ट होती है जिसे तालिका 5 में दिया गया है।

**तालिका 5— विषयवार शिक्षकों की संख्या व माध्य**

| विषय | कला | विज्ञान | वाणिज्य |
|---|---|---|---|
| शिक्षकों की संख्या | 79 | 61 | 40 |
| माध्य | 102.19 | 99.07 | 101.98 |

तालिका 5 से स्पष्ट है कि विज्ञान व वाणिज्य शिक्षण विषय का अध्यापन करने वाले शिक्षक-प्रशिक्षकों की अपेक्षा कला विषय का अध्यापन करने वाले शिक्षक-प्रशिक्षक अध्यापन कार्य के प्रति अधिक वचनबद्ध हैं।

**तालिका 6— अध्यापन पेशे के प्रति पुरुष व महिला शिक्षक-प्रशिक्षकों की जवाबदेही**

| जेंडर भेद | संख्या | माध्य | प्रमाप विचलन | 't' मूल्य |
|---|---|---|---|---|
| पुरुष | 42 | 78.39 | 4.29 | 3.08* |
| महिला | 138 | 80.27 | 4.92 | |

*0.05 सार्थकता स्तर

तालिक 6 से ज्ञात होता है कि जवाबदेही के संबंध में पुरुष व महिला शिक्षक-प्रशिक्षकों के प्राप्तांकों का माध्य क्रमशः 78.39 व 80.27 है तथा प्रमाप विचलन क्रमशः 4.29 व 4.92 है। तालिका 6 में प्रदर्शित माध्यों के अंतर की सार्थकता की जाँच करने पर मूल्य 3.08 प्राप्त हुआ है, जो 0.05 सार्थकता स्तर के सारणी मूल्य 1.96 से अधिक है।

अतः शून्य परिकल्पना, अध्यापन पेशे के प्रति पुरुष व महिला शिक्षक-प्रशिक्षकों की जवाबदेही के प्राप्तांकों में सार्थक अंतर नहीं है, अस्वीकृत की जाती है। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि पुरुष व महिला शिक्षक-प्रशिक्षकों की जवाबदेही के मध्य सार्थक अंतर पाया जाता है। इसका संभावित कारण यह हो सकता है कि पुरुषों की अपेक्षा महिलाएँ अपने दायित्व के प्रति ज़्यादा जवाबदेह होती हैं क्योंकि महिलाएँ अपने कार्यों को पूर्ण ज़िम्मेदारी के साथ और समय पर पूरा करती हैं।

**तालिका 7 — अध्यापन पेशे के प्रति ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के शिक्षक-प्रशिक्षकों की जवाबदेही**

| क्षेत्र | संख्या | माध्य | प्रमाप विचलन | 't' मूल्य |
|---|---|---|---|---|
| ग्रामीण | 60 | 79.58 | 4.47 | 0.73* |
| शहरी | 120 | 78.77 | 4.86 | |

*0.05 सार्थकता स्तर

तालिका 7 से यह ज्ञात होता है कि जवाबदेही के संबंध में ग्रामीण व शहरी शिक्षक-प्रशिक्षकों के प्राप्तांकों का माध्य क्रमशः 79.58 व 78.77 है तथा प्रमाप विचलन क्रमशः 4.47 व 4.86 है। तालिका 7 में प्रदर्शित माध्यों के अंतर की सार्थकता की जाँच करने पर मूल्य 0.73 प्राप्त हुआ है, जो 0.05 सार्थकता स्तर पर तालिका मूल्य 1.96 से कम है।

अतः शून्य परिकल्पना अध्यापन पेशे के प्रति ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के शिक्षक-प्रशिक्षकों की जवाबदेही के मध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं है, स्वीकृत की जाती है। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि

© NCERT not to be republished

ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के शिक्षक-प्रशिक्षकों में अध्यापन पेशे के प्रति समान जवाबदेही होती है।

**तालिका 8— 10 वर्ष से कम एवं 10 वर्ष से अधिक शिक्षण अनुभव वाले शिक्षक-प्रशिक्षकों की जवाबदेही**

| शिक्षण अनुभव | संख्या | माध्य | प्रमाप विचलन | 't' मूल्य |
|---|---|---|---|---|
| 1 से 10 वर्ष | 137 | 78.15 | 4.39 | 2.50* |
| 11 वर्ष से अधिक | 43 | 80.58 | 5.98 | |

*0.05 सार्थकता स्तर

तालिका 8 से ज्ञात होता है कि शिक्षण अनुभव के संबंध में 10 वर्ष से कम शिक्षण अनुभव व 10 वर्ष से अधिक शिक्षण अनुभव वाले शिक्षक-प्रशिक्षकों का माध्य क्रमशः 78.15 व 80.58 है तथा प्रमाप विचलन क्रमशः 4.39 व 5.98 है। इन माध्यों की सार्थकता जाँच करने पर मूल्य 2.50 तालिका प्राप्त हुआ है जो 0.05 सार्थकता स्तर पर तालिका मूल्य 1.96 से अधिक है।

अतः शून्य परिकल्पना 10 वर्ष से कम व 10 वर्ष से अधिक शिक्षण अनुभव वाले शिक्षक-प्रशिक्षकों की जवाबदेही में सार्थक अंतर नहीं है, अस्वीकृत की जाती है। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि शिक्षण अनुभव के आधार पर 10 वर्ष से कम व 10 वर्ष से अधिक शिक्षण अनुभव वाले शिक्षक-प्रशिक्षकों की अध्यापन पेशे के प्रति जवाबदेही में भिन्नता है। 10 वर्ष से अधिक शिक्षण अनुभव वाले शिक्षक-प्रशिक्षक अध्यापन पेशे के प्रति अधिक जवाबदेह पाए गए। इसका संभवतः यह कारण हो सकता है कि जैसे-जैसे शिक्षक के अनुभव में वृद्धि होती है, वैसे-वैसे उसकी अपने कार्य के प्रति एक धारणा विकसित हो जाती है तथा वह प्रत्येक कार्य के लिए स्वयं को अधिक उत्तरदायी समझने लगता है।

तालिका 9 में अध्यापन पेशे के प्रति कला, विज्ञान व वाणिज्य शिक्षण विषयों का अध्यापन करने वाले शिक्षक-प्रशिक्षकों की जवाबदेही (N=180) में प्रसरण विश्लेषण ANOVA से संबंधित है। df=2, df=177 का प्राप्त मूल्य 32614.19 है जो कि इसके 0.05 सार्थकता स्तर पर अपेक्षित मूल्य 2.99 से ज़्यादा है। अतः शून्य परिकल्पना, अध्यापन पेशे के प्रति कला, विज्ञान या वाणिज्य संकाय का अध्यापन करने वाले शिक्षक-प्रशिक्षकों की जवाबदेही के प्राप्ताकों के मध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं है, अस्वीकृत की जाती है। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि कला, विज्ञान या वाणिज्य संकाय के शिक्षक-प्रशिक्षकों में अध्यापन पेशे के प्रति जवाबदेही में भिन्नता है।

इस भिन्नता की माध्य परीक्षण के आधार पर निम्न स्थिति स्पष्ट होती है जिसे तालिका 10 में दिया गया है।

**तालिका 9— अध्यापन पेशे के प्रति कला, विज्ञान या वाणिज्य संकाय का अध्यापन करने वाले शिक्षक-प्रशिक्षकों की जवाबदेही**

| प्रसरण स्त्रोत | वर्गों का योग | स्वतंत्रता अंश | प्रसरण | प्रसरण अनुपात | परिणाम |
|---|---|---|---|---|---|
| प्रतिदर्शों के माध्य | 1124628.701 | 3–1=2 | 562314.35 | 32614.19 | अस्वीकृत |
| प्रतिदर्शों के अंतर्गत | 3051.74 | 180–3=177 | 17.2414 | | |

© NCERT not to be republished

**तालिका 10—विषयवार शिक्षकों की संख्या व माध्य**

| विषय | कला | विज्ञान | वाणिज्य |
|---|---|---|---|
| शिक्षकों की संख्या | 79 | 61 | 40 |
| माध्य | 80.27 | 78.33 | 77.7 |

तालिका 10 से स्पष्ट होता है कि विज्ञान व वाणिज्य शिक्षण विषय का अध्यापन करने वाले शिक्षक-प्रशिक्षकों की अपेक्षा कला विषय का अध्यापन करने वाले शिक्षक-प्रशिक्षक अध्यापन कार्य के प्रति अधिक जवाबदेह हैं।

## शोध के निष्कर्ष

इस अध्ययन में प्रदत्तों के विश्लेषण के उपरांत जो निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं, वे निम्न हैं—

अध्यापन पेशे के प्रति शिक्षक-प्रशिक्षकों की वचनबद्धता से संबंधित निष्कर्ष—

- जेंडर भेद के आधार पर प्रदत्तों के विश्लेषण से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि पुरुष शिक्षक-प्रशिक्षक की अपेक्षा महिला शिक्षक-प्रशिक्षक अध्यापन पेशे के प्रति अधिक वचनबद्ध होती है।
- क्षेत्र के आधार यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि वचनबद्धता पर क्षेत्र का कोई प्रभाव परिलक्षित नहीं होता है अर्थात् ग्रामीण व शहरी दोनों क्षेत्रों के शिक्षक-प्रशिक्षक अध्यापन पेशे के प्रति समान रूप से वचनबद्ध पाए गए।
- शिक्षण अनुभव के आधार पर प्राप्त निष्कर्ष से ज्ञात हुआ कि वचनबद्धता पर शिक्षण अनुभव का प्रभाव परिलक्षित होता है। 10 वर्ष से कम अनुभव रखने वाले शिक्षक-प्रशिक्षकों की अपेक्षा 10 वर्ष से अधिक अनुभव रखने वाले शिक्षक-प्रशिक्षक अध्यापन कार्य के प्रति अधिक वचनबद्ध पाए गए।
- विभिन्न शिक्षण विषयों का अध्यापन करने वाले शिक्षक-प्रशिक्षकों की अध्यापन पेशे के प्रति वचनबद्धता के संबंध में निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि विज्ञान तथा वाणिज्य विषयों के शिक्षक-प्रशिक्षक की अपेक्षा कला विषयों के शिक्षक-प्रशिक्षक अध्यापन पेशे के प्रति अधिक वचनबद्ध होते हैं।

***अध्यापन पेशे के प्रति शिक्षक-प्रशिक्षकों की जवाबदेही से संबंधित निष्कर्ष***

- जेंडर भेद के आधार पर प्रदत्तों के विश्लेषण से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि पुरुष शिक्षक-प्रशिक्षक की अपेक्षा महिला शिक्षक-प्रशिक्षक अपने कार्य के प्रति अधिक जवाबदेह होती हैं।
- क्षेत्र के आधार पर यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि जवाबदेही पर क्षेत्र का कोई प्रभाव परिलक्षित नहीं होता है अर्थात् ग्रामीण व शहरी दोनों क्षेत्रों के शिक्षक-प्रशिक्षक अध्यापन कार्य के प्रति समान रूप से जवाबदेह पाए गए।
- शिक्षा अनुभव के आधार पर प्राप्त प्रदत्तों के विश्लेषण से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि जवाबदेही पर शिक्षण अनुभव रखने वाले शिक्षक-प्रशिक्षकों की अपेक्षा 10 वर्ष से अधिक अनुभव रखने वाले शिक्षक-प्रशिक्षक अध्यापन कार्य के प्रति अधिक जवाबदेह पाए गए।
- विभिन्न शिक्षण विषयों का अध्यापन करने वाले शिक्षक-प्रशिक्षकों की अध्यापन पेशे

© NCERT not to be republished

के प्रति जवाबदेही के संबंध में निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि विज्ञान तथा वाणिज्य विषयों के शिक्षक-प्रशिक्षक की अपेक्षा कला विषयों के शिक्षक-प्रशिक्षक अध्यापन पेशे के प्रति अधिक जवाबदेह होते हैं।

## परिचर्चा

इस शोध अध्ययन के निष्कर्षों की तुलना संबंधित साहित्य में प्रयुक्त अध्ययनों के निष्कर्षों से करने पर स्पष्ट होता है कि प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष माहेश्वरी, ए. (2014) तथा बाधवर, मंजू (2014) के अध्ययनों के निष्कर्षों से मेल खाते हैं जबकि, शुक्ला, शशि (2014), अत्तारवाला, पारुल (2015), अत्री, अजय कुमार एवं देवी, नीलम (2017) तथा बशीर लियाकत (2019) के अध्ययनों के निष्कर्षों से मेल नहीं खाते हैं।

## शैक्षिक निहितार्थ

इस शोध अध्ययन के निष्कर्षों का विश्लेषण करने पर शैक्षिक निहितार्थ प्राप्त हुए हैं—

- इस शोध के निष्कर्षों से यह ज्ञात होता है कि पुरुष शिक्षक-प्रशिक्षकों को कार्य के प्रति वचनबद्धता के लिए अभिप्रेरित किया जाना चाहिए।
- अधिक अनुभव वाले अध्यापक कार्य के प्रति अधिक वचनबद्ध पाए गए। अतः इन अध्यापकों का यह दायित्व बनता है कि वे कम अनुभव वाले अध्यापकों को अपने अनुभव से मार्गदर्शन प्रदान करें, जिसके परिणामस्वरूप उनमें वचनबद्धता को अधिक विकसित किया जा सकता है।
- विज्ञान एवं वाणिज्य के शिक्षकों में वचनबद्धता की कमी पाई गई इसके लिए विभिन्न सेवाकालीन कार्यक्रमों के माध्यम से कार्य के प्रति वचनबद्धता विकसित की जा सकती है।
- शिक्षक-प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्य द्वारा पुरुष शिक्षक-प्रशिक्षकों को उनके दायित्व के प्रति सजग किया जाए।
- अधिक अनुभव वाले अध्यापकों को चाहिए कि वे अपने से कम अनुभव वाले अध्यापकों को अपनी कार्यशैली के माध्यम से अभिप्रेरित करें जिससे कि वे जवाबदेह बन सकें।
- विज्ञान एवं वाणिज्य के शिक्षक-प्रशिक्षकों को कार्य के महत्व के लिए प्रेरित करें। इसके परिणामस्वरूप विज्ञान एवं वाणिज्य के शिक्षक-प्रशिक्षकों में जवाबदेही के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित होगा।

© NCERT not to be republished

## संदर्भ

अत्तारवाला, पारुल. 2015. ए स्टडी ऑफ़ टीचर्स अकाउंटबिलिटी इन रिलेशन टू टीचर्स प्रोफ़ेशनलिज़्म ऑफ़ प्राइमरी स्कूल्स ऑफ़ कडी. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ रिसर्च इन ह्यूमेनिटीज़ एंड सोशल साइंसेज.* 3(8), पृष्ठ संख्या 47–50.

अत्री, अजय कुमार एवं नीलम देवी. 2017. रिलेशनशिप बिटवीन प्रोफ़ेशनल कमिटमेंट एंड सेल्फ़ एफ़िकेसी ऑफ़ सेकंडरी टीचर एजुकेटर्स. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एडवांस्ड एजुकेशन एंड रिसर्च.* 2(4), पृष्ठ संख्या 42–44. 29 मार्च, 2020 को file:///C:/Users/admin/AppData/Local/Temp/2-4-30-551.pdf से प्राप्त किया गया है.

बशीर, लियाकत. 2019. टू *स्टडी द इन्फ्लुएंस ऑफ़ प्रोफ़ेशनल कमिटमेंट ऑन टीचिंग इफ़ेक्टिवनेस अमंग सेकंडरी स्कूल*. 12(4), 29 मार्च, 2020 को file:///C:/Users/admin/AppData/Local/Temp/RG57.pdf से प्राप्त किया गया है.

बाधवर, मंजू. 2014. प्रोफ़ेशनल कमिटमेंट एंड अकाउंटबिलिटी ऑफ़ टीचर्स. *इंटरनेशनल रेफ़रीड जर्नल ऑफ़ रिव्यू एंड रिसर्च*. 2(2). 29 मार्च, 2020 को http://irjrr.com/irjrr/March2014/1.pdf से प्राप्त किया गया है.

माहेश्वरी, ए. 2004. माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता का अध्ययन. *इंडियन एजुकेशनल एब्स्ट्रैक्ट*. जनवरी अंक. रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली.

शुक्ला, शशि. 2014. *टीचिंग कम्पीटेंसी, प्रोफ़ेशनल कमिटमेंट एंड जॉब सटिस्फ़ेक्शन.–ए स्टडी ऑफ़ प्राइमरी स्कूल टीचर्स*. 29 मार्च, 2020 को http://www.iosrjournals.org/iosr-jrme/papers/Vol-4%20Issue-3/Version-2/G04324464.pdf से प्राप्त किया गया है.

© NCERT not to be republished